Guidance and Counselling For Special Groups

(विशिष्ट समूहों के लिए निर्देशन एवं परामर्श)

Presented by

DR. MUKESH KUMAR

Associate Professor
Department of Educational Studies
Mahatma Gandhi Central University
East Champaran, Bihar

मुझमें कोई विशिष्ट प्रतिभा नहीं है। मुझे केवल जुनून की हद तक उत्सुकता है।

-अल्बर्ट आइंस्टीन

विशिष्ट बालक

विशिष्ट बालक उत्तम या प्रतिभा सम्पन्न ही नहीं होते अपितु सामान्य से उच्च एवं निम्न दोनों ही श्रेणियों के हो सकते हैं। विशिष्ट बालक शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक गुणों में सामान्य बालकों से भिन्न होता है अर्थात विशिष्ट बालकों के लक्षण, गुण, स्वरूप सामान्य बालकों से भिन्न होते हैं। ऐसे बालकों के लिए कुछ अतिरिक्त अनुदेशन तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

विशिष्ट बालक एवं विशिष्ट समूह

- प्रत्येक विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने अनेक बालक आते हैं, जिनकी अपनी कुछ शारीरिक और मानसिक विशेषताएँ होती हैं। इनमें कुछ प्रतिभाशाली, कुछ मन्दबुद्धि, कुछ पिछड़े और कुछ शारीरिक दोषों वाले होते हैं जिन्हे विशिष्ट बालक की संज्ञा दी जाती है तथा समूह विशिष्ट समूह कहलाता है।
- एक विशिष्ट बालक सामान्य शिक्षा कक्ष तथा सामान्य शिक्षा कार्यक्रमों से पूर्णतया लाभान्वित नहीं हो सकता।

विशिष्ट बालकों के प्रकार

- प्रतिभाशाली बालक
- सृजनात्मक बालक
- पिछडे बालक
- मन्द बुद्धि बालक
- जटिल अथवा समस्यात्मक बालक
- श्रवण बाधित बालक
- अधिगम असमर्थी बालक
- बहुविकारों से पीड़ित बालक
- दृष्टि बाधित बालक आदि।

विशिष्ट बालकों की समस्याऐं

- अधिकांश बच्चों को कभी न कभी व्यवहारगत समस्याएँ होती हैं। व्यवहारगत समस्याएँ बालक की अंतदशाओं या प्रायः ध्यान में न आने वाले वाह्य दबाओं या दूसरों द्वारा नहीं समझे जाने वाली बातों से उत्पन्न होती है। व्यवहारगत समस्याएँ पलायन से लेकर उत्तेजित होने, विरोध, शत्रुता प्रकट करने एवं अत्यन्त आक्रामक रूख अपना लेने के रूप में प्रकट होती है।

विशिष्ट बालकों की समस्याऐं

कक्षा में विद्यार्थी व्यवहारगत समस्याओं का सामना अपने ढंग से करने का प्रयास करते हैं। जो कभी–कभी दूसरों के लिए दुःखदायी हो जाता है। जिस प्रकार मानसिक रूप से पिछड़े बालक धीरे–धीरे सीखते हैं। उसी प्रकार अन्य विशिष्ट बालक व्यवहारगत समस्याओं के कारण अपने विकास और अधिगम में गंभीर बाधा महसूस कर सकते हैं।

विशिष्ट बालकों की समस्याऐं

- व्यवहारगत समस्याओं से ग्रस्त विद्यार्थी अपने अध्यापकों के लिए प्रायः अत्यधिक कुंठित करने वाली समस्याएं या लाभदायक चुनौतियां खड़ी कर देते हैं। व्यवहारगत समस्या ग्रस्त विद्यार्थियों की शारीरिक, मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति समय पर होनी चाहिए। विशिष्ट बालकों की समस्याएँ दो अवस्थाओं में होती हैं।
- विशिष्ट बच्चों की समस्याएं
- विशिष्ट किशोरों की समस्याएं

विशिष्ट बच्चों की समस्याएं

बच्चों द्वारा अनुभव की जाने वाली कुछ समस्याएं जैसे अत्यधिक शर्मीलापन, डरावनापन, आक्रामक व्यवहार, ध्यान आकर्षित करना, अति फुर्तीलापन,अत्यधिक निर्भरता, दिवास्वप्न देखना, पडे रहना, धोखा देना और चोरी करना तथा शारीरिक रूप से विकलांग बालक के सामाजिक समायोजन में उत्पन्न कठिनाईयां, उपहास के डर से सामान्य बच्चों के साथ खेल–कूद में सम्मिलित न होना, एकाकीपन आदि हैं। इन समस्याओं में से कई समस्याएं माता–पिता और अध्यापकों द्वारा पुरूस्कार (जैसे–प्रशंसा तथा खिलौना आदि), का प्रयोग करके हल की जा सकती हैं।

विशिष्ट किशोरों की समस्याएं

- प्रायः स्वतंत्रता के लिए भरपूर प्रयास करना, वयस्क सत्ता से छुटकारा पाने हेतु बगावत करना। माता–पिता, अभिभावकों तथा विद्यालयीन अधिकारियों से खटपट, नशीले पदार्थों का सेवन, कर्तव्य पलायन, चोरी और लैंगिक दुराचार किशोरावस्था की सामान्य समस्याएँ है। ऐसी समस्याओं के लिए किशोर दूसरों को दोष देते हैं किशोरावस्था में अभिप्रेरणा की कमी पाई जाती है।

विशिष्ट बालकों की आवश्यकताएँ

- सामान्यतः विद्यार्थियों की ऐसी कई शारीरिक, मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक आवश्यकताएँ है जो उनकी वृद्धि एवं विकास के लिए आवश्यक है। ये आवश्यकताएँ निम्नलिखित हैं–

शारीरिक आवश्यकताएं

- उचित भोजन व कपड़े
- दर्द व बीमारी से बचाव
- खेलने के लिए समय

विशिष्ट बालकों की आवश्यकताएँ

मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं

- व्यक्ति के रूप में स्वीकरण
- संवेगात्मक संतुष्टि
- सतत पुनः विश्वास
- स्नेह
- भावात्मक अनुक्रियाओं को नियंत्रित करने में सहायता
- दूसरे व्यक्तियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए इसे सीखने के लिए सहायता प्रदान करना।

विशिष्ट बालकों की आवश्यकताएँ

शैक्षिक आवश्यकताएं

- ऐसी शिक्षा जो डर पर आधारित न हो
- अध्ययन में सहायता
- विद्यालय में समझपूर्ण और गरमजोशी भरा वातावरण
- उपलब्धि की भावना
- जीवन की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए शिक्षा
- कुछ न कुछ नया सीखने के लिए प्रोत्साहन
- पिछड़े एवं प्रतिभाशाली बालकों के उत्थान हेतु विशेष सुविधाओं तथा साधनों की आवश्यकता ।

बालकों की सहायता में शिक्षक की भूमिका

- विशिष्ट शिक्षा तथा सामान्य शिक्षा के उद्देश्य समान होते है–जैसे बालकों को उपयुक्त शिक्षा द्वारा, मानवीय संसाधनों, देश के विकास, समाजिक पुर्नगठन व विकास तथा व्यवसायिक कार्यकुशलता आदि की जानकारी प्रदान करना।

बालकों की सहायता में शिक्षक की भूमिका

- शारीरिक दोष युक्त बालकों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ण पहचान तथा निर्धारण करना।
- शारीरिक दोष की दशा में उससे पहले बालक कितनी गम्भीर स्थिति को प्राप्त हो उनके रोकथाम के लिये पहले से ही उपाय करना। बालकों के सीखने की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए कार्य करने की नवीन विधियों द्वारा बालकों को शिक्षा देना।

बालकों की सहायता में शिक्षक की भूमिका

- शारीरिक रूप से बाधित बालकों की शिक्षण समस्याओं की जानकारी देना तथा सुधार हेतु सामूहिक संगठन तैयार करना।
- शारीरिक रूप से बाधित बालकों का पुनर्वास कराना।

बालकों की सहायता में शिक्षक की भूमिका

- शारीरिक बाधित बालकों के माता पिता को निपुणता तथा कार्यकुशलता के बारे में समझाना तथा बालकों की कमियों के बारे में सुरक्षा तथा रोकथाम के उपाय बताना।

बालकों की सहायता में शिक्षक की भूमिका

- विशिष्ट बालकों के शैक्षिक चयन में अध्यापक के मार्गदर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक अध्यापक विशिष्ट बालक की अभिरूचि तथा अभिक्षमता के आधार पर उसके शैक्षिक क्षेत्र में विषय चयन में सहायता प्रदान करता है।

बालकों की सहायता में शिक्षक की भूमिका

- विशिष्ट बालकों के व्यवसायिक चयन में शिक्षक के मार्गदर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक बालकों की रूचि के अनुसार तथा उपयोगी व्यवसायिक क्षेत्रों की जानकारी देते है। जिसकी सहायता से वो अपने लिये उपयोगी व्यवसाय की चयन करते हैं।

विशिष्ट बालकों का मार्गदर्शन

- विशिष्ट बालकों का महत्व सामान्य कक्षा में आने वाली कठिनाईयों का समाधान खोजने द्वारा समझा जा सकता है। सामान्य कक्षा में दिब्यांग तथा अन्य विभिन्न श्रेणी के बालक होते हैं। शारीरिक रूप से बाधित और साधारण या प्रतिभाशली बालकों के लिये अध्यापकों को ऐसी विधियां अपनानी पडती हैं जिससे उपरोक्त विभिन्न बालकों को शिक्षा देते समय कक्षा में अध्यापक को कुछ परेशानियों का सामना न करना पडे।

विशिष्ट बालकों का मार्गदर्शन

- विशिष्ट बालकों को शिक्षक द्वारा दिया जाने वाला अनुदेशन समझने में समस्या आती है। कुछ विद्यार्थी अनुदेशन की सार्थकता के माप को कम समझते हैं ऐसी स्थिति में विशिष्ट कक्षाओं की आवश्यकता को गम्भीरता से समझा जाता है।
- प्रयोगात्मक आँकडे प्रकट करते है कि सामान्य शिक्षण संस्थाओं में प्रतिभाशाली बालकों के साथ सामाजिक कुप्रबन्ध उग्र रूप में पाया जाता है ऐसी परिस्थितियों में उनका व्यक्तिगत व्यवहार स्वीकार करने योग्य नहीं होता है क्योंकि वे स्वयं को उद्धण्डता के कार्यों में शामिल कर लेते हैं।

विशिष्ट बालकों का मार्गदर्शन

- लगभग 5 प्रतिशत शारीरिक रूप से बाधित बालक विशिष्ट शिक्षा केन्द्रों में शिक्षा ग्रहण करते हैं। तथा उन्हें विभिन्न कार्य क्षेत्रों में शिक्षा दी जाती है। लेकिन अधिकांश ऐसी शिक्षण संस्थायें महानगरों या नगरों में स्थित है। ऐसी शिक्षण संस्थाओं में ग्रामीण क्षेत्र के बालक शिक्षा ग्रहण करने नहीं जा पाते है। अतः इन क्षेत्रों में शिक्षा केन्द्रों की अति आवश्यकता है।

प्रतिभाशाली बालकों का मार्गदर्शन

- प्रतिभाशाली बालक अपने आयु के बालको से ज्यादा बुद्धिमान होते हैं। अतः इस प्रकार के बालक के मार्गदर्शन हेतु माता–पिता एवं शिक्षक को अत्यधिक ध्यान केन्द्रित करना पड़ता है। प्रतिभाशाली बालक का बुद्धिस्तर सामान्य बालकों से ऊँचा होने के कारण कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

प्रतिभाशाली बालकों का मार्गदर्शन

- प्रतिभाशाली बालक सामान्य बालकों की अपेक्षा शीघ्र ही अपना कार्य समाप्त कर लेता है। अतः शिक्षक प्रतिभाशाली बालक का मार्गदर्शन कर उपयुक्त पाठ्यक्रम का निर्माण कर सकते हैं। प्रतिभावान बालकों की यदि विशेष प्रकार की शिक्षा का प्रबन्ध न हो तो उनकी बुद्धि लब्धि में गिरावट आने का भय रहता है।

सृजनात्मक बालकों का मार्गदर्शन

- जो बालक किसी नवीन स्थिति का निर्माण करने व जीवन में अभिनव व्यवहार करने की योग्यता रखते हैं उन्हें सामान्य बालकों से पृथक सृजनात्मक व रचनात्मक बालक कहते हैं। ऐसे बालक सृजनात्मक कार्य करने में अपनी बुद्धि का भरपूर प्रयोग करते हैं तथा इनमें आत्मविश्वास अधिक होता है।

सृजनात्मक बालकों का मार्गदर्शन

- बालकों के माता–पिता और अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे उनके लिए समुचित वातावरण की व्यवस्था करें ताकि सृजनात्मकता उचित रूप से विकसित हो सकें। बालकों में सृजनात्मकता के उचित विकास के लिए आवश्यक है कि उनमें सदैव धनात्मक सामाजिक अभिवृत्तियां विकसित हो वरना उनका साथियों, सरंक्षकों एवं शिक्षकों से सम्बन्ध बिगड़ जाता है। बालकों को ज्ञान अर्जित करने के जितने अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। उतना ही अधिक सृजनात्मक विकास होने की संभावना रहती है।

Thanks !